धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जून- 2012

* अपने बीमार सेवकों के प्रति हमदर्दी
* हमारे संस्कार हमें हांक रहे हैं
* कृतज्ञ हृदयों की सुन्दरता
* मनुष्य की नीच दुख से मुक्ति और उच्च सुख की प्राप्ति
* जीवन प्रसंग
* श्राद्ध की सभा, श्रद्धांजली और बरसी
* उत्तम स्वास्थ्य का आधार है, शाकाहार
* भगवान की सेवा में पत्र
* शुभ संग्राम

अपने बीमार सेवकों के प्रति हमदर्दी

(1) सन् 1922 के महोत्सव के बाद भगवान की सेहत बहुत खराब हो गई। इसलिए फरवरी सन् 1923 में उनको जलवायु के परिवर्तन के लिए देहली जाना पड़ा, परन्तु वहां आने से भी उनकी सेहत में कोई बेहतरी नहीं आई। फिर उन्होंने अम्बाला जाने का फैसला किया, परन्तु वहां जाकर भी उनकी सेहत पहले से और अधिक खराब हो गई। इसलिए भगवान को लाहौर लौटना पड़ा। यहां भी उनकी सेहत खराब चलती रही और वह कई बार सारी सारी रात नहीं सो सकते थे। इस से उनकी कमज़ोरी और बढ़ गई।

इस अवस्था में एक-दिन प्रातः काल भगवान को पता लगा कि श्रीमान लाला जानकी दास जी बीमार पड़े हैं। भगवान अपने कष्टों और खराब सेहत, बेआरामी की रातों को भूल गए और उस कमरे में तशरीफ ले गए, जहां लाला जी अपने बिस्तरे पर बीमार पड़े थे और उन्होंने बहुत हमदर्दी से उनकी सेहत के विषय मे पूछा।

अपने एक सेवाकारी सेवक के प्रति भगवान के इस सहानुभूति पूर्ण व्यवहार को देखकर, विशेषकर उस समय जबकि उनको स्वयं अपनी कमजोर बीमार शरीर के लिए बेहद सहायता की आवश्यकता थी, एक ग्रेजूयेट सेवक के हृदय पर जो वहां खड़े थे, इतना असर हुआ कि सुबक सुबक कर रोने लगे।

(2) जब सोलन का जलवायु भी भगवान के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं बैठा तो वह लाहौर तशरीफ ले आए। उनका स्वास्थ्य बहुत दुर्बल था। बड़ी मुश्किल से वह सीढ़ियों पर चढ़ सकते थे। उन दिनों मैं बुखार में ग्रस्त था और मैमोरियल मन्दिर की दूसरी मंजिल पर बीमारी के बिस्तरे पर पड़ा था। भगवान को मेरी बीमारी का पता लगा। अपनी खराब सेहत के बारे में सब कुछ भूल कर वह चाहते थे कि ऊपर आएं, मुझे देखें और हौसला दें। जब मुझे पता लगा कि पूजनीय भगवान सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर आना चाहते हैं, तो यह देख कर कि उनकी पहले से ही कमज़ोर सेहत पर कैसा बुरा प्रभाव पड़ेगा, मुझ से रहा न गया और अभी भगवान ने पहली सीढ़ी पर ही अपने चरण रखे थे कि मैं उनके चरणों में पहुंच गया। उनका आशीर्वाद लिया और उनकी हार्दिक सहानुभूति प्राप्त की। भगवान के ऐसे हमर्दी भरे व्यवहार अपने तुच्छ सेवकों के लिए होते ही रहते थे।

एस०जी० आर० सितम्बर सन् 1912

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 6

जून – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हमारे संस्कार हमें हांक रहे हैं

प्रत्येक मनुष्य अपने जन्म, अपनी परवरिश, अपनी सोसाईटी आदि से संस्कार प्राप्त करता है। उसके माता पिता जिस धर्म को मानते हैं, जो पूजा पाठ करते हैं, जो देवी देवताओ की अराधना करते हैं, जैसी भाषा बोलते हैं, जैसा उनका रहन सहन वा खान पान है, उन्हें ही ठीक वा हितकर विश्वास करते हैं। ऐसा विश्वास करके वह उनसे बन्ध जाता है, उसी में वह अपनी भलाई देखता है। अपने बन्धन के कारण वह यह जानना ही नहीं चाहता कि वह संस्कार कहां तक ठीक हैं, कहां तक नहीं।

भिन्न भिन्न धर्मो,वा देशों के भिन्न भिन्न संस्कार होते हैं, भिन्न भिन्न रीति रिवाज होते हैं। हिन्दु, सिक्ख, ईसाई, जैनी, बौद्धी आदि के अपने अपने वेश भूषा वा पूजा पाठ हैं। उन्हीं साधनों को पूरा करके वह सन्तुष्ट रहते हैं। दूसरी ओर दूसरों के संस्कारों को ठीक न समझकर नुक्ताचीन भी बन जाते हैं। यही संस्कारों की विभिन्नता मनुष्य समाज में आपसी दूरी, विरोधता वा युद्धों का भी कारण बन जाती है।

एक एक कट्टर सिक्ख घराने में पला हुआ व्यक्ति केसों का महत्व, गुरूद्वारे की मान्यता, कीर्तन, प्रसाद वा अरदास का महत्व समझता है। स्नान, केस, रखकर कीर्तन करके वा गुरूद्वारे जाकर ही तृप्त रहता है, जो ऐसा नहीं करते उन्हें अच्छा नहीं समझा जाता। गुरूपुर्व में शामिल हो कर ही सम्मान वा खुशी प्राप्त करता है।

हिन्दु घरों में जन्म लेकर, उनके संस्कार ग्रहण करता है उनके संस्कार सिक्खों से भिन्न हैं, वह जन्म अष्टमी, राम नौवीं, रामलीला, श्राद्ध, नराते आदि रखकर तृप्ति पाते हैं। मूर्तियों की पूजा और उससे सम्बन्धित व्रत वा पूजा का महत्व देखते हैं। इन्हीं को वह धर्म के साधन मानते हैं।

कोई राम को, कोई कृष्ण को, कोई पवन पुत्र हनुमान जी, कोई शिव की पूजा करके तृप्ति पाता हें इसके साथ ही व्रत वा त्यौहार जुड़े हुए मानता है।

आर्य समाज, ब्रह्म समाज के अपने संस्कार हैं।

मुस्लिम भाईयों का अपने संस्कार हैं उनके अपने विश्वास हैं। धार्मिक क्रियाएं भिन्न हैं। हजरत मुहम्मद साहिब, कुरान शरीफ, नमाज, ज़हाद, वजु, बकराईद, बली, कुर्बानी, शरा, शादी, तलाक सब कुछ उनका अपना है। उनका विश्वास है कि खुदा ने परिंदे,

चौपाए उनके खाने के लिए बनाए हैं। उनको खाना पुण्य का काम है, यह खुदा का हुक्म है। मक्का, मदीना के पवित्र स्थानों पर हज्ज करना विशेष पुण्य का काम है और उसका विशेष महत्व है। शुक्रवार को नमाज का विशेष महत्व माना जाता है। इसके भी दो वर्ण हैं सुन्नी और शैया।

ईसाई जगत के अपने विश्वास वा कर्म काण्ड हैं। गाड, बाईबल, हजरत, ईसामसीह, मरीयम की पाक हस्तियां हैं। गिरजा, चर्च आदि पूजा स्थान हैं क्रिसमिस इनका विशेष त्यौहार है और बहुत महत्व रखता है। हैवन और हैल (Hell) के विश्वास हैं, फरिश्तों और शैतानों में विश्वास है। अच्छे कर्म गाड करवाता है, और बुरे कर्म शैतान करवाता है। इसके भी दो वर्ग हैं, प्रौटस्टैंट और कैथोलिक। दोनों के संस्कार अपने अपने हैं। कुछ विश्वास दोनों में एक हैं। कुछ जीवन शैली में अन्तर है।

इसी प्रकार बौद्ध, जैन, पारसी आदि धर्मो के अपने अपने रस्मों रिवाज, धार्मिक कर्म काण्ड वा संस्कार हैं। सब को अपने अपने संस्कार वा धार्मिक संस्कार ठीक प्रतीत होते हैं। उन संस्कारों को पूरा करना ही धार्मिक होने का चिन्ह माना जाता है। संसार के सारे धर्मो की दुनियां अपने अपने संस्कारों के इर्द गिर्द ही केन्द्रित है।

साधारणत! हर मनुष्य अपने अपने विश्वासों वा संस्कारों को ठीक मानता है। यह प्रश्न ही नहीं उठता कि धर्म कुछ और भी हो सकता है। जिस प्रकार किसी मनुष्य के लिए धरती के gravittion pull से बाहर निकलना मुश्किल है, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को अपने संस्कारों से ऊपर उठना कठिन है, चाहे उसमें उसका कितना ही हित सम्भव हो। संस्कारों की गुलामी मनुष्य को सचाई की ओर जाने नहीं देती। पहाड़ की तरह रोक बन जाती है। मनुष्य कल्पना वा मिथ्याओं का कूड़ा ढोकर ही तृप्त रहता है और हानि ग्रस्त होकर मर जाता है। संस्कार व कल्पित विश्वास धर्म नहीं हो सकते।

मनुष्य के भिन्न भिन्न कल्पित विश्वासों वा संस्कारों ने अभी तक मनुष्य को "धर्म" की ठीक, सच्ची विज्ञानमूल परिभाषा तक भी निराधारित नहीं करने दी। वह पूजा, पाठ, स्तुति, दुआ, नमाज और हज्ज वा वेशभूषा को ही धर्म समझकर बैठा है।

धर्म तो नेक बनने का नाम है। उच्च बनने का नाम है। नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्राप्त करने का नाम है। अपने से निकलकर दूसरों पर निस्सार होने का नाम है। हानि रहित होकर हितकर बनने का नाम है। उच्च स्तर का इन्सान बनने के लिए उच्च भाव धारी होना ज़रूरी है। भाव हमारी आत्मा, हमारे हृदय में निहित है। अपनी आत्मा को जानना, अपने भावों का निरीक्षण करना, आत्मिक रोगों को जानना, नीच भावों से मुक्ति और उच्च भावों की प्राप्ति के मार्ग को समझना और उस पर चलना, मनुष्य को धर्म की ओर ले जाता है।

गुरू महाराज ने मिथ्या संस्कारों की भयानकता को, और सच्चे धर्म के प्रति बेसुधि का अपने एक उपदेश के भीतर इस प्रकार चित्रण किया है।

"दूर दूर से एक एक यात्री यहां पहुंचने में जो कष्ट उठाता है, जितना धन खर्च करता है, जितनी मेहनत करता है, वह उसे गंगा किनारे पहुंच कर सफल समझता है, क्यों? गंगा जी के दर्शन से और

उससे भी बढ़कर उसमें डुबकी लगाकर वह खुश है- - - क्या इस प्रकार खुश होकर उसके भीतर यह प्रश्न उठता है कि मैं गंगा स्नान के लिए क्यों आया, और इस स्नान से मुझे क्या विशेष प्राप्त हुआ। काशी जी वा कानपुर की तरफ जब मैं गंगा स्नान करता था, अब यहां आकर जो गंगा स्नान किया है, उन दोनों में क्या अन्तर है। गंगा स्नान वा किसी और कुंए या तलाब में स्नान करने में क्या अन्तर है- - - यहां हर की पौड़ी पर स्नान करने से मुझे क्या अधिक मिला? क्या यह सच्च नहीं कि वहां जैसे अपने शरीर को पानी से मैं धो सकता था, यहां भी केवल शरीर की मैल को ही धो सकता हूं, इसके इलावा कुछ नहीं। वहां जैसे नित्य के स्नान से मेरे कोई आत्मिक रोग नहीं कटे, यहां भी नहीं कटे। मैं तो यहां थोड़े दिनों के लिए आया हूं, जो यहां हमेशा रहते हैं, उनकी हालत क्या है। ऐसे प्रश्न साधारण पुरुषों वा स्त्रियों के दिमाग में तो क्या उठने थे, अनेकों पढ़े लिखे और शिक्षा प्राप्त जनों के दिमागों में भी नहीं उठते। वह केवल अन्धे संस्कारों के पीछे चल रहे हैं। अन्धे संस्कार उन्हें लाठी से हांक रहे हैं और वह अन्धाधुन्ध पीछे चल रहे हैं। आत्मा क्या है? शरीर क्या है? दोनों का सम्बन्ध क्या है? शरीर के रोग क्या हैं? आत्मा के रोग क्या हैं? शरीर किन रोगों से रोगी वा नष्ट होता है? आत्मा किन रोगों से नष्ट होता हैं शरीर के रोगों की दवाई क्या है? आत्मा रोगों से किस दवाई से परित्राण पा सकता है?

शरीर किस आहार से बलिष्ट होता है? आत्मा किस आहार से बचता और उन्नत होता है? वह आहार क्या है और कहां से प्राप्त हो सकता है? यह महा हितकर प्रश्न, उक्त यात्रियों के भीतर पैदा नहीं होते। वह जीवन या आत्म तत्व ज्ञान सम्बन्धी रोशनी से खाली, लाखों, करोड़ों, मूर्ख और विद्वान स्त्रियों और पुरुषों की कैसी दुर्दशा! कैसी कृपा पात्र अवस्था!! तब कितना सौभाग्य है उनका जिनको यह ज्योति प्राप्त हुई हो और जिनका ऐसी ज्योति के भण्डार के साथ कोई जीवित वा सच्चा सम्बन्ध स्थापित हो गया हो, और उन्हें (आत्मा) जीवन सम्बन्धी अन्धकार से निकलने का और जीवन के उच्च मार्ग पर पड़ने का अवसर मिला हो।

बलदेव सिंह

देव बाणी

देवात्मा ने फरमाया है: -

नापाक आदमी पाक आदमी में कोई विशेषता नहीं देख सकते। यदि देख सकते होते तो उन पर थूकते क्यों? उन्हें सताते क्यों? उनकी जान के प्यासे क्यों होते? वह न्याय का शब्द सुनते हैं, परन्तु उसे देखते नहीं। सत्य और असत्य दो अलग अलग शब्द सुनते हैं, परन्तु उनमे फर्क नहीं देख सकते, इसलिए वह सत्य की तरफ नहीं जाते। झूठ तो उन्हें नज़र आता है, उसमे कुछ खूबी भी नज़र आती है, अकसर उससे दुनिया के काम निकलते हुए प्रतीत होते हैं, परन्तु सत्य में उन्हें कोई खूबी नज़र नहीं आती, इसलिए वह सत्य की ओर नहीं जाते उल्टा झूठ की ओर जाते हैं। कैसी! अफसोस नाक हालत!!

कृतज्ञ हृदयों की सुन्दरता

मैंने एक कहानी पढ़ी कि एक अमीर आदमी अपने घर में बहुत साधारण कपड़े पहने पौधों को पानी दे रहा था, तो इतने में कुछ गुण्डे आए और उसे अपनी कार में डालकर भागने लगे, वहां से एक गरीब घर का बेटा गुज़र रहा था, वह अक्सर उस घर के सामने से गुजरता और उस अमीर आदमी को पौधों को पानी देते देखता, उसने उन्हें माली ही समझा। परन्तु उन्हें गुण्डों द्वारा अगवाह करते देखकर वह अपना साईकल छोड़कर उन पर टूट पड़ा, और किसी तरह उस जन को उन गुण्डों से छुड़वा दिया, वह जन उस लड़के का धन्यवाद करते उस घर में घुस गया।

अमीर आदमी ने उस लड़के के विषय में जानकारी ली, तो उसे पता लगा कि यह लड़का कालिज में पढ़ता था, परन्तु माता पिता नहीं हैं, बड़े भाई का Accident होने से खिलौने बनाने का काम भी बहुत कम हो गया। साधारण ज़रुरतों के लिए उनके पास पैसे नहीं हैं। तो यह लड़का पढ़ाई छोड़कर इधर उधर छोटे छोटे काम करके भाई की सहायता करता हैं उस सेठ ने बिना कुछ बताए बड़े भाई को advance देकर खिलौने बनाने का बहुत बड़ा आर्डर दे दिया, परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा, जिन्हें दो समय का खाना मिलना मुश्किल था, उनकी आर्थिक हालत सुधर गई। वह लड़का कालिज में फिर गया, तो बी०ए० पास कर ली, उसके बाद सेठ जी ने उसे बुलाया तो वह लड़का उस माली नुमा जन को सूट बूट में देखकर चकित रह गया और कहा, "माली काका आप यहां।" तो सेठ के मताहतों ने बताया कि यह तो फलां सेठ है। उसने पैर छूए और सेठ जी ने उसे नौकरी का नियुक्ति पत्र दे दिया। वह धन्य धन्य हो गया, धीरे ध ीरे उसने सारा कारोबार ही उसे सम्भाल दिया और कहा कि "तुमने उस दिन गुण्डों से मेरी जान न बचाई होती, तो मैं कहां होता, मैं तुम्हारा ऋण उतार नहीं सकता" वह नौजवान उनके पैरों में गिर गया और आंसू बहाने लगा। कृतज्ञता का भाव कैसे सुन्दर दृष्य पैदा करता है। धन्य हैं ऐसे कृतज्ञ भावी जन!

उस जन की कहानी से मुझे भी अपने जीवन में घटी एक कृतज्ञ लड़की की याद आ गई। मैंने मोगा स्कूल में देव समाज गर्लज़ हाई स्कूल में नौकरी शुरू की। आठवीं और दसवीं के बोर्ड के पेपर होते थे। अध्यापिक अक्सर बोर्ड की कलासें लेने से कतराते थे, परन्तु चैलेंज लेना और कठिन काम से गुजरने में मुझे आनन्द आता था, इसलिए पहले ही वर्ष मैंने आठवीं कलास की अंग्रेजी, सांईस की कलास ली। स्कूल में जब पढ़ाना शुरू किया तो कलास बहुत कमज़ोर थी, बच्चे अक्सर देहाती होते थे, माता पिता अनपढ़ होते थे, जो कोई सहायता नहीं कर सकते थे। मैंने कलास को मेहनत करवानी शुरू की, परन्तु स्कूल का समय उनके लिए काफी नहीं होता था, तो स्कूल के बाद मैं सारी कलास को ही घर में बुला लेती और 2 - 3 घण्टे free उनको घर में पढ़ाती।

इस कलास में एक हरभजन नाम की बैकवर्ड क्लास से सम्बन्धित लड़की थी, जिसके

माता पिता नहीं थे, दादी उसको पाल वा पढ़ा रही थी। वह पढ़ाई में कमज़ोर थी, परन्तु वह लड़की बहुत दीन और मेहनती थी। मैंने उसकी तरफ विशेष ध्यान देना शुरू किया अपनी तरफ से कापियां और किताबें दी तो वह पढ़ाई में चल पड़ी। उसने बहुत मेहनत की और बहुत अच्छे नम्बर लेकर वह आठवीं पास कर गई, फिर आगे भी 9 - 10 वीं कलासें पास कर ली, पर वह लड़की कभी पैरों को छूती, कभी रो पड़ती कि मैडम, आपने एक गरीब लड़की को इस योग्य बनाया, बहुत कृतज्ञता का प्रकाश वह एक बार नहीं बार बार करती। फिर उसे J.B.T. में दाखिला मिल गया, J.B.T के बाद उसे सरकारी नौकरी मिल गई। घर में पढ़ने के दौरान भी वह कभी साग, कभी सब्जी, कभी मक्की के भुट्टे आदि अपने खेत से लाकर घर में रख जाती और साथ ही रो पड़ती और कहती मैं तो आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकती, आपने मेरी जिन्दगी बना दी, उसका कर्ज़ मैं चुका नहीं सकती। उस कलास में 30 - 40 लड़कियां थी, परन्तु इस जैसा कृतज्ञता का सुन्दर भाव किसी में नहीं दिखा। उसके बाद उसके विषय में मुझे कुछ पता नहीं लगा।

हम चण्डीगढ़ आ गए, तो एक दिन मैं स्कूल के बरामदे में खड़ी थी, तो वही लड़की आकर सबके सामने मेरे पैरों में गिर गई और रोने लगी, जब मैंने उठाया तो वह बगलगीर होकर कहने लगी, मैडम, मैं आज जो कुछ भी हूं, वह सब आपकी कृपा से हूं, मैं मौजें कर रही हूं, सब आपकी मेहरबानी है। वहां कुछ अध्यापिकाएं भी खड़ी थी, वह पूछने लगी कि यह कौन है, तो मैंने बताया कि मेरी विद्यार्थी रही हैं। वह अपने साथ मक्खन, कुछ बेर लेकर आई और कहने लगी कि मुझ गरीबणी की यह भेंट स्वीकार करो।

मैंने उसको बिठाया और उसके परिवार के हालात पूछे। कहने लगी कि मैंने बड़ी मुश्किल से आपका पता करवाया और मिलने चली आई, यह बताने के लिए आपकी यह ज़िन्दगी संवारी हुई है। साथ में उसके पति भी थे, जो बिजली के महकमें में अच्छी post पर थे। उन्होंने पटियाला के पास अपनी कोठी वा अन्य जायदाद बना ली है। साथ साथ छोटा छोटा व्यापार वा भैंसे आदि रखते हैं। उनके दो बेटे और एक बेटी है, जो अच्छे स्कूलों में पढ़ रहे हैं। यह सब बताती हुई वह धन्य धन्य होकर बार बार यही कहती जाती, यह सब आपकी मेहरबानी है, यदि आप इस गरीब और अनाथ बच्ची को इतनी मेहनत से न पढ़ाते तो मैं कहां होना था। उसका एक एक शब्द गहरी कृतज्ञता का प्रकाश था। फिर वह कई बार मिलने आई और उसके पति भी साथ होते जो बताते कि वह आप लोगों की मेहरबानियों को अकसर याद करके बताती रहती है।

मैंने सैंकड़ों बच्चों को पढ़ाया है, परन्तु ऐसा कृतज्ञ हृदय देखने को नहीं मिला। हमने भी अपने अध्यापिकों से सेवा पाई हैं, पर जो भावनाएं उस लड़की में हैं, उसमें बहुत कमी है। धन्य हैं ऐसे कृतज्ञ हृदय, जिनकी महक और दिलों को भी महका देती है।

सुरजीत बराड़

मनुष्य की नीच दुख से मुक्ति और उच्च सुख की प्राप्ति

अगर सारी दुनिया मे निगाह मारकर देखा जाये तो हम मालूम करेंगे कि दुनिया के अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के सुख के सामान बहुत बढ़ गए हैं। पिछली शताब्दी में यह सामान विस्तार और गहराई के विचार से इतने अधिक हो गये हैं कि उनका अनुमान लगाना कठिन है। पहले जो सफर महीनों में बहुत कठिनाई से होता था और कई बार जान लेवा साबित होता था, वह अब घंटों या दिनों की बात बनकर रह गया है। रेलगाड़ियों, हां हवाई जहाजों के जरिये सफर बहुत आसानी से होता है। रेलगाड़ियों और हवाई जहाजों की रफतार कितनी बढ़ गई है मानों यह दुनिया सुकड़ कर रह गई है।

मनुष्य बीमार होता है। पहले जहां अच्छे चिकित्सक नहीं मिलते थे और कितने बच्चे और मनुष्य ठीक इलाज न होने के कारण मौत का शिकार हो जाते थे, अब बड़े-बड़े आलीशान हस्पताल, चिकित्सालय, अलग-अलग बीमारियें के अलग-अलग माहर डाक्टर शरीर और उसकी बीमारियों के अनुसन्धान के लिए बड़े-बड़े कालिज और यूनिवर्सिटियां कायम हो गई हैं।

शरीर को जीवित रखने के लिए उसको खने पीने की वस्तुओं की आवश्यकता है। खाने पीने की यह वस्तुएँ संसार के अन्दर काफी मौजूद हैं और यह बढ़ती ही जाती है। परन्तु मनुष्य अपनी सुख अनुरागी प्रकृति के कारण उनका दुरूपयोग करने के लिए मजबूर है। यह स्वाद सुख अनुराग के कारण स्वादिष्ट भोजन को अधिक मात्रा में खा जाता है जिससे वह बीमार होकर दुख भोगता है। खाने पीने के लाखों और करोड़ोंपति होकर भी मनुष्य सुखी नहीं। हां, कितने मनुष्य यह सब कुछ रखकर भी दुख की भट्टी में जल रहे हैं।

अब सवाल पैदा होता है कि मनुष्य के दुखों की बुनियाद कहां है? परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति में उसका जवाब साफ है, ज्यों-ज्यों मनुष्य की सुख प्राप्ति के सामान बढ़ते चले जाते हैं, त्यों-त्यों उसकी इच्छाएं भी बढ़ती जाती हैं। ज्योंहि उन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, वह दुख की आग में जलने लगता है। धन प्राप्ति में बाधा होने से बेचैन हो उठता है। एक जन छः लाख रूपये के मालिक थे (जबकि उस जमाने में लखपति होना एक बहुत बड़ी बात थी उनको शहर में उन दिनों चंद जन ही लखपति होंगे)। उनके एक बेटे ने उनके कारोबार में पचास हजार का नुकसान कर दिया जिससे वह दुखी होकर बीमार पड़ गये। उनके बड़े बेटे ने उन्हें धीरज देने की बहुत कोशिश की और कहा कि वह एक वर्ष में ही कमाकर इस नुकसान को पूरा कर देंगे, परन्तु उनकी तसल्ली ने हुई और हाय-हाय करते रहे और अपनी जान दे दी। ओह! धन के नीच अनुराग का कैसा भयानक फल!! एक धन अनुराग की बात नहीं, ईर्ष्या, द्वेष, मान बड़ाई,

यश, अपमान वाह-वाह आदि के सब अनुराग ही मनुष्य को दुखी करने और आग की भट्टी में जलने के लिए मजबूर कर देते हैं। सब के सब सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं और मनुष्य की अकल का चिराग गुल कर देते हैं। उसे कुछ दिखाई नहीं देता। हां, उससे भी बढ़कर वह मनुष्य की उल्टी दृष्टि बना देते हैं। वह उसे ठीक को गलत और गलत को ठीक समझने के लिए मजबूर कर देते हैं।

एक नौजवान लड़का था। उसने अपने निहायत नेक दादा को गोली मारकर हलाक कर दिया क्योंकि वह दादा उस नौजवान को बर्बाद करने के लिए रुपये नहीं देता था। वह दादा उस नौजवान पोते को बहुत प्यार करता था और उसकी भलाई को मुख्य रखकर उसकी नीच ख्वाहिशों को पूरा होने में कुछ बाधा डालता था। ओह! कैसी खौफनाक उल्टी दृष्टि!! अपने सच्चे हितकारी और नेक दादा को उल्टे रुप में देखने की कैसे मकरूह घटना!!! अब सवाल पैदा होता है, कि मनुष्य उन्नतशील मान्सिक शक्तियां रखकर भी अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के नीच सुख अनुरागों के कारण, हां, एक-एक नीच सुख अनुराग की गुलामी के कारण अपनी महा हानि करने के लिए लाचार है। उसकी ऐसी महा-भयानक अवस्था में परिवर्तन कैसे आये? ऐसे महा हानिकारक बंधनों से मुक्ति कैसे मिले? उसका ठीक उत्तर यह है, कि नेचर के लाखों वर्षो के विकासक्रम में सब प्रकार के सत्य और शुभ के अद्वितीय अनुरागों में विभूषित जिस देवात्मा का आविर्भाव संसार में हुआ, मनुष्य ऐसे अद्वितीय आविर्भाव की महिमा को ठीक प्रकार से देख और उपलब्ध कर सके। और उनकी शरण में आने और उनके साथ सत्य विश्वास, श्रद्धा और कृतज्ञता आदि के निहायत मूल्यवान सूत्रों के साथ जुड़ने का अधिकार प्राप्त कर सके। उसके बिना उसके जीवन की खैर नहीं।

नायाब घरेलू नुस्खे

* डिप्रेशन की शिकायत होने पर पालक का नियमित सेवन लाभदायक साबित होगा।

* डायरिया होने पर उबली शकरकंदी को नमक अैर काली मिर्च पाउडर के साथ रात में खाने के साथ लें। राहत मिलेगी।

* शरीर में ऊर्जा की कमी हो रही हो, तो इस टिप्स को आजमाएं। एक कप शहद को 3 कप पानी में मिला कर धीमी आंच पर उबालें। जब उसकी मात्रा 2 कप पानी के बराबर हो जाए, तो उसे ठंडा कर गहरे रंग की बोतल में भर लें। थकावट होने पर आधा कप मिश्रण में कुटी हुई दालचीनी,

बाकी का पृष्ट 17 पर

जीवन प्रसंग

इरादा दृढ़ हो तो बेहतर होता है कॉमन सेंस

यह 1970 के दशक की बात है। देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी ने उसी समय अपना कार्यभार संभाला था। उसी दौरान नई दिल्ली के सदर बजार इलाके में छिटपुट दंगे हो गए। वहां पहुंचकर किरण बेदी ने देखा कि आग की लपटों से घिरे एक मकान के भीतर फंसे लोग मदद के लिए चीख-पुकार मचा रहे हैं। किरण बेदी ने साथ आए कांस्टेबलों से मकान का दरवाजा तोड़ने के लिए कहा, लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई। इसके बाद उन्होंने अपने एक कांस्टेबल से कहा कि वह उनके ऊपर पानी डालते हुए उन्हें पूरी तरह से गीला कर दे। इस गीली यूनिफॉर्म के साथ वह दरवाजे को तोड़ते हुए अंदर दाखिल हुई और एक महिला को बचाकर बाहर ले आई। जब कांस्टेबलों ने उन्हें ऐसा करते देखा, तो वे भी खुद को गीला कर लेागों को बचाने के लिए मकान के भीतर दाखिल हो गए। इस तरह मकान में फंसे सभी सत्रह लोगों को जीवित बचा लिया गया।

उनसे जुड़ी एक और गाथा है। जब वह दिल्ली ट्रैफिक की हैड थीं, तभी उन्होंने एक व्यस्त मार्ग पर देखा कि आम आदमी अपना स्कूटर भी नहीं निकाल पा रहा है। यह देखकर उन्होंने एक क्रेन लाने के लिए कहा। उन दिनों दिल्ली पुलिस के पास महज दो क्रेन थीं और दोनों ही सुधरने के लिए पड़ी थी। ऐसे में उन्होंने प्राइवेट क्रेनों की सेवाएं लेने से भी गुरेज नहीं किया। उनका यह काम उस वक्त काफी सुर्खियों में रहा, जब उन्होंने गलत साइड में पार्क की गई एक कार को उठवाकर थाने पहुंचा दिया, जबकि उन्हें बताया गया था कि यह कार पीएमओ की है। एक बार किरण बेदी से मैंने पूछा कि उपरोक्त दोनों मामलों से निपटते वक्त उनके दिमाग मे क्या चल रहा था, तो उन्होंने कहा, 'मैंने ठान लिया था कि किसी भी सूरत में मुझे आग की लपटों के बीच फंसे लोगों की जान बचानी है। जहां तक दूसरी घटना की बात है तो मैंने तय कर लिया था कि आप लोगों का गुजरने के लिए मार्ग देना है।'

फंडा यह है कि .... आप कुछ कर गुजरने या हासिल करने की मन में ठान चुके हैं तो ऐसा जरूर कर पाएंगे। इरादा दृढ़ हो तो आपका कॉमन सेंस भी बेहतर काम करता है।

अपनी विपदा से न करें दूसरों का आकलन

एक सीनियर डॉक्टर को आपातकालीन सर्जरी के लिए अस्पताल में बुलाया गया था। कुछ देर पहले तक वह डॉक्टर ऐसी जगह पर थे, जहां पर लोग अमूमन बहुत कम जाते हैं। अस्पताल के सर्जरी ब्लॉक में पहुंचकर उन्होंने देखा कि एक लड़के का पिता डॉक्टर का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। उन्हें देखते ही लड़के का पिता चीखते हुए बोला-'आपको आने में इतना समय कैसे लग गया? क्या आपको जिम्मेदारी का एहसास नहीं हैं? डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं अस्पताल में नहीं था और आपके बेटे के बारे में इत्तला मिलते ही तुरंत यहां आ गया। आप शांत हो जाएं।' 'शांत हो जाऊं? यदि आपका बेटा मर रहा हो तो आप क्या करेंगे?' उसने गुस्से

से कहा। तब तक नर्से भी सर्जरी के लिए तैयारी कर चुकी थीं।

कई घंटे तक चली सर्जरी के बाद डाक्टर ने ऑपरेशन थिएटर से बाहर आकर लड़के के पिता से कहा, 'भगवान का शुक्र है! आपके बेटे की जान बच गई।' और इतना कहने बाद वह कुछ भी सुने बगैर उससे यह कहते हुए तेजी से वहां से निकल गए, 'आपको और कुछ पूछना हो तो नर्स से पूछ सकते हैं' कुछ देर के बाद जब एक नर्स ऑपरेशन थिएटर से बाहर आई तो लड़के के पिता ने उससे कहा, 'आखिर यह डॉक्टर इतना खड़ूस क्यों है? वह थोड़ी देर के लिए भी नहीं रुका।' यह सुनकर नर्स ने डबडबाई आंखों से कहा, 'कल ही एक सड़क दुर्घटना में उनके बेटे का निधन हो गया है। जब आपके बेटे की सर्जरी के लिए अस्पताल से फोन किया गया, उस वक्त हम सब उनके बेटे के अंतिम संस्कार के लिए श्मशान घाट में इकट्ठा थे। अब आपके बेटे की जिंदगी बचाने के बाद वह अपने बेटे के अंतिम-संस्कार की बाकी रस्में निभाने के लिए भागे हैं।' मुझे नहीं लगता कि यह सुनने के बाद वह शख़्स डॉक्टर वा उनकी समर्पित टीम के बारे में इतना बुरा बोलने के लिए खुद को कभी माफ कर पाया होगा।

फंडा यह है कि.... अपनी विपदा के आधार पर सामने वाले का आकलन करना ठीक नहीं है। क्या पता वह उस वक्त किस तरह के हालात से गुजर रहा हो?

युधिष्ठिर ने अपने आचरण से श्रीकृष्ण को किया प्रभावित

पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर अपने सत्यभाषण व धर्मानुकूल आचरण के कारण लोगों की श्रद्धा के पात्र थे। स्वयं श्रीकृष्ण भी उनका बड़ा आदर करते और उन्हें 'धर्मराज' कहकर पुकारते थे। अनके यदुवंशी श्रीकृष्ण के इस व्यवहार को देखकर आश्चर्य से भर उठते। उनके विचार से श्रीकृष्ण को तो युधिष्ठिर के प्रति आशीष की मुद्रा बनाए रखनी चाहिए थी, जबकि श्रीकृष्ण हैं कि युधिष्ठिर को 'धर्मराज' कहकर श्रद्धावनत हो जाते हैं। एक दिन एक यदुवंशी से रहा नहीं गया। उसने श्रीकृष्ण से पूछा-'आप युधिष्ठिर को धर्मराज कहकर उनका इतना सम्मान क्यों करते हैं?' श्रीकृष्ण बोले- 'मित्र! महाभारत के युद्ध के समय युधिष्ठिर प्रतिदिन सायंकाल वेश बदलकर कहीं जाते थे। अर्जुनादि पांडवों ने इस रहस्य का पता लगाना चाहा। जब एक शाम उन्होंने युधिष्ठिर का पीछा किया तो देखा कि वे युद्ध में घायल कौरव सैनिकों की सेवा कर रहे हैं। जब भाइयों ने वेश बदलकर इस कौरव सेवा का कारण पूछा, तो वे बोले- 'यदि मैं वास्तविक स्वरूप में होता तो ये पीड़ित अपना कोई कष्ट मुझे नहीं बताते। इसलिए वेश बदलकर सच्ची सेवा करने का धर्म निभा रहा हूं'। इसी कारण न केवल मैं, बल्कि यह संपूर्ण समाज धर्मराज के रूप में युधिष्ठिर को शीर्ष स्थान देता है।' यह सुनकर सभी यदुवंशियों के मन युधिष्ठिर के प्रति हार्दिक श्रद्धा से भर गए। वस्तुतः सेवा का कोई लिंग, सम्प्रदाय या अपना- पराया नहीं होता। वह सहज दयावश और मानवता के नाते की जानी चाहिए। तभी वह सच्चे पुण्य की भागी बनती है।

बरसी

दिनांक 13.5.12 रविवार को श्रीमान मदन लाल जी एवं श्री मान भगवान दास जी सुपुत्र श्रीमान लाला अर्जुन दास जी मंडी फूल वाले, की बरसी मकान नं 1718 सैक्टर 4 पंचकूला में की गई। तकरीबन 50 - 60 जन उपस्थित थे। इस मौके पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा की महिमा के एवं वैराग विषयक भजनों का गान किया गया। श्रीमान सुनील दत्त जी एवं श्री मान जगदीश जी ने भजनों का गान किया। श्रीमान जगदीश जी ने प्रत्येक भजनों के गान से पहले उनकी व्याख्या करके उपस्थित जनों को उन भजनों के भावों के बारे में बताया। सबसे पहले "हमारे पूजनीय सत्गुरू तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" भजन का पाठ व गान श्री मान सुनील दत्त जी ने बडे सुन्दर भावों से किया, इसके बाद श्रीमान जगदीश जी ने वैराग विषयक भजन गाया। इस प्रकार दानों श्रीमान जी ने बारी बारी से महिमा विषयक और वैराग विषयक भजनों का गान किया। अन्त में परलोक वासी आत्मा के सम्बन्ध में उनकी आत्मा के भले के लिए, कामना विषयक भजन "हे देह त्यागी सम्बन्धी हमारे" का भजन गा कर उनकी आत्मा की शान्ति के लिऐ कामना की जिसमें सभी उपस्थित जनों ने साथ दिया।

भजन के गान के बाद श्रीमति रक्षा जी ने अपने भावों का प्रकाश किया कि उनके परिवार में समाज की कृपा से कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ, सभी भाई बहन मेल के साथ रहते हैं।

श्रीमति अंजू जी सुपुत्री श्रीमान मदन लाल जी ने ब्यान किया कि माता पिता के उपकारों को गिना नहीं जा सकता है। उन्होंने समाज के उपकारों को याद किया।

श्रीमति मंजू ज सुपुत्र श्रीमान मदन लाल जी ने उस दिन Mother day के रूप में याद किया और अपनी मां के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया, जो उस सभा में उपस्थित थी। इस पर श्रीमान जगदीश जी ने अपनी मां को याद करके मां के सम्बन्ध में एक भजन गाया जिसका सभी उपस्थित जनों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। कई लोगों ने ऐसे अवसर पर दोबारा आने की इच्छा जताई। परिवारिक जनों ने समाज को 5100 रूपये दान दिए।

(एक हाजरीन)

पाठक गण! यदि आपके सम्पर्क में भी कोई कृतज्ञ वा उच्च भाव धारी जन आया हो, तो ऐसी घटना आप लिखकर भेज सकते हैं, ऐसी घटनाएं हमें प्रोत्साहित करती हैं।

श्राद्ध की सभा

हमारे बहुत ही योग्य और उत्साही धर्म सम्बन्धी, श्रीमान सुखदेव सिंह जी केसूपुरा (इंगलैंड वाले) के माननिय पिता जी श्री गुरुमुख सिंह जी का अचानक देहान्त हो गया, उनके सम्बन्ध में श्राद्ध की सभा उनके गांव में 5 अप्रैल की शाम को रखी गई। इसके उपलक्ष्य में श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डगीढ़ से वहां पहुंचे। सभा में उनके करीबी रिश्तेदार, नगरवासी और कितने ही धर्म सम्बन्धी पहुंच गए थे। 100 के लग भग हाज़री थी।

सब से पहले श्रीमान मेहर सिंह जी ने एक भजन का गान किया। फिर जीवन सारा विसारा "नामक भजन का गान किया। सबसे पहले गुरू महाराज का सुन्दर हार से छवि द्वारा अर्चन किया गया। फिर देहत्यागी जी की फोटो पर, उनकी पत्नी, बेटे बेटियों ने हारों द्वारा सम्मान प्रदर्शन किया। हाजरीन ने भी फूल भेंट किए।

फिर सभापति जी ने बहुत सरल भाषा में गुरु महाराज की शिक्षा के विषय में ब्यान किया, बताया कि मानवता तीन सवालों के जबाब लेने के लिए सदा आतुर रहती है।

1) मनुष्य कहां से आता है। 2) मनुष्य जन्म पाकर मनुष्य का लक्ष्य क्या है? 3) मनुष्य मरकर कहां जाता है?

सभापति जी ने तीनों सवालों के उत्तर गुरू महाराज की विज्ञान मूलक शिक्षा के आधार पर दिए। फिर बताया कि मनुष्यात्मा वा जीवनी शक्ति क्या है? वह सूक्ष्म शरीर कैसे बनाती है? आगे वह कैसे जीवित रहता है? यह सारी शिक्षा विस्तार से समझाई गई।

मनुष्य के लक्ष्य के विषय में बताया कि मनुष्य का लक्ष्य किसी ईश्वर वा देवी देवता को प्राप्त करना या जूनियों से मुक्ति प्राप्त करना नहीं। उसका लक्ष्य है अपने आत्मा को जानना, उसको नीच जीवन से बचाना वा उच्च जीवन में विकास करना।

मनुष्य के आत्मा की खुराक उच्च प्रभाव वा देव प्रभाव हैं और विशुद्ध सेवा है। दूसरों को बनाने से हम बनते हैं, दूसरों को बिगाड़ने से हम बिगड़ते हैं।

मौत की घटना से हमें सबक लेना चाहिए, मौत को याद रखना चाहिए। देह त्यागी को भी विसारना नहीं चाहिए, इससे हमारा सम्बन्ध उनसे जुड़ा रहता है। फिर "परलोक के सम्बन्धियों को, हम नहीं बिसराएंगे" नामक भजन गाया गया। बताया कि कैसे परलोक वासी आत्मा के गुणों वा उपकारों को चिन्तन करके, अपनी ग़ल्तियों के प्रति दुखी होकर, उनके प्रति शुभ कामना करते रहने से उनके साथ सम्बन्ध रहेगा।

फिर सभा पति जी ने उनके नेक, सरल और मेहनती रूप के बारे में बताया। वह लड़ाई झगड़ा नहीं करते थे, जमीन जायादाद के लिए किसी से झगड़ा मोल नहीं लेते थे। बच्चों को तरक्की करने के लिए उत्साहित करते थे। सादगी पसंद थे, वह सेवाकरी थे।

सुखदेव जी :- फिर उनके छोटे सपुत्र सुखदेव जी ने भरे दिल से ब्यान किया कि वह अपने अपमान के कारण बड़ी Tension में से गुजरे। वह चाहते थे कि किसी तरह बच्चे पढ़ जाएं, उन्होने तन्हा हमारी सेवा में सब कुछ वार दिया। बच्चों ने उन्हें दुख और अपमान के सिवा कुछ भी नहीं दिया, उन्हें सताया

वा तड़पाया है। मुझे अफसोस है कि उनकी जितनी सेवा होनी चाहिए थी, वह नहीं कर सका। उनकी सादगी वा ईमानदारी पर सदा फख़्र होता है। ऐसे पिता का पुत्र होने के कारण मुझे भी सम्मान मिल रहा है कि मैं ऐसे नेक बाप का बच्चा हूं। गुरू महाराज की शरण में आकर होश आई है, जो उन्हें महान देख सका हूं। वह बहुत अच्छे भाई थे। बड़ों का बहुत सन्मान करते थे वह अपने उपकारियों को याद करते रहते थे। उनको धन्यवाद देते नहीं थकते थे। अब जब कुछ समझ आने लगी तो वह चले गए। हमें बड़ा गर्व है कि उन्होंने हमें ईमानदारी की कमाई से पाला। आज उनकी नेक कमाई और ईमानदारी पर जो फख़्र है, वह राजे महाराजे का पुत्र होकर भी नहीं होना था। वह किसी से कोई मांग या उमीद नहीं रखते थे। हमेशा यही कहते कि अच्छे बनों, नेक बनों, पहले से बिगड़ना नहीं। उन्होंने मुझे विशेष दिल दिया है। अच्छी मान्सिक शक्तियां दी हैं। हृदय की अच्छी पूंजी मिली है, जो मुझे गुरू की शिक्षा कुछ समझ आई है। मुझे दुख है कि वह स्वंय Tension में रहे।

मुझे अपने अपमान करने वा दुख देने का बहुत दुख है। ऐसे नेक इन्सान का अधिक से अधिक हित और विकास हो।

फिर **श्रीमान मेहरसिंह जी** ने बहुत अच्छे भावों से भरकर माता पिता के उपकारी रूप का ब्यान किया कि जो निस्वार्थ हमारी भलाई वा शुभ चाहते हैं, उनके बिना हमारा इतना भला कोई नहीं चाह सकता माता पिता हमारे निरोल भले के इच्छुक हैं।

अब सुखदेव जी के माता जी अकेली रह गई हैं, उनको बड़ा दुख और वियोग है, अब उनका अधिक से अधिक ख़्याल रखने की ज़रूरत है। उनको इतना सन्मान और सेवा मिलनी चाहिए कि वह यह बिछोड़ा भूल सकें।

फिर सबने मिलकर "हे त्यागी सम्बन्धी हमारे" नामक भजन का गान किया। फिर सभापति जी ने हृदय के गहरे भावों से देह त्यागी के शुभ के लिए शुभ कामना की। और देह त्यागी वा परिवारिक जनों को धैर्य मिलने की कामना की।

6 अप्रैल : - 6 अप्रैल की सुबह एक सभा की गई। इसमें 25 - 30 जन शमिल हुए। इस सभा में देव समाज के लासानी कारज और शिक्षा के विषय में ब्यान किया गया। इससे समय रहते रहते लाभ उठाने की सबको प्रेरणा की।

सभा के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान जीत सिंह जी को लेकर रवाना हुए और देव धर्म मिशन डब वाली के मन्दिर में पहुंच गए।

* सिगमंड फ्रायड के अनुसार, किसी भी बच्चे के भविष्य के वर्ष उसके बचपन के अनुभवों से तय होते है। वहीं प्रसिद्ध बाल वैज्ञानिक रकोफ ने कहा है कि अच्छे परिवारिक माहौल में पले बच्चे अच्छा आचरण करने वाले होते हैं।

* हम अपने माता - पिता के प्यार को तब तक नहीं समझ पाते जब तक हम खुद माता - पिता नहीं बन जाते।

श्रद्धांजली

मधू सूदन जी जो गुरू महाराज के उत्साही सेवक हैं, उनकी माता जी, जो बिहार में थी, उनका 9.3.2012 को 80 - 90 वर्ष की आयु में स्वर्ग वास हो गया। जब मधू सूदन जी को फोन आया तो वह व्याकुल होकर जाने का प्रबन्ध करने लगे और माता जी के पार्थिव शरीर को उन्होंने अपने पहुंचने तक रखने की प्रार्थना की, बहुत कोशिश करके उन्हें गाड़ी में सीट मिली और वह समय पर वहां पहुंच गए। मां को स्नान करवाया जा रहा था, मां की दर्शन करके उन्हें कुछ तसल्ली हुई। मां के गले में फूलों का हार डाला, चरणों में प्रणाम किया। गंगा के किनारे सस्कार की तैयारी की गई, वहां बहुत विरोधी मिथ्या विश्वासी महौल में भी "हे त्यागी सम्बन्धी हमारे" नामक भजन का गान किया। सब आंसू बहा रहे थे। पांच जनों ने मिलकर मुख - अग्नि दी। रास्ते में सबको होटल में भोजन करवाया। पिता जी ने सारे गांव को खाने पर निमन्त्रित किया। 2500 के लगभग जनों को खाना खिलाया गया। वहां के विश्वास के अनुसार कुछ बर्तन वा 4000 रु० दान आदि में दिए। फिर देह त्यागी के सम्बन्ध में भजन का गान किया गया और परलोक में उनकी सहायता के लिए सहाय प्रार्थना की गई। जलघर जी ने "मां का दिल" नामक कविता पढ़ी। फिर माता के उपकारों वा गुणों का चिन्तन किया।

वहां एक अश्चार्य जनक घटना घटी। गांव के मुखिया से ज़मीन को लेकर उनके परिवार के साथ लड़ाई चल रही थीं। दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे थे। दोनों एक दूसरे का मुंह देखना नहीं चाहते थे। परन्तु उन्होंने मृत्यु वाले घर में खाना बनाकर देने की पेशकश की, तो परिवार ने खुशी खुशी स्वीकार कर लिया। फिर वह श्राद्ध पर खड़े होकर रो रोकर बोले कि ऐसी मां सबको मिले, जो कभी न पड़ोसी से और न घर में किसी से लड़ी हो, न ही किसी को गाली दी। इस प्रकार दोनों परिवारों की दुश्मनी सदा के लिए ख़त्म हो गई।

उसके बाद एक दोस्त अम्बाला से आए थे, उन्होंने भी भाव प्रकाश किया और मां की आत्मा की शन्ति की प्रार्थना की।

जलघर जी ने ब्यान किया श्रद्धेय माता जी मेरी बहुत उपकारी थी। मेरा पालन पोषण बड़ी मां (ताई जी) ने किया, वह सर्वगुण सम्पन्न थीं। उनमें सेवा भाव वा दया का भाव बहुत प्रबल था। उनका हृदय कोमल था। दूसरों का दुख उन्हें बहुत दुख पहुंचाता था। किसी का बच्चा बिमार होने पर तन, मन, धन से सेवा में लग जाती थी। पशु जगत से उन्हें बहुत प्रेम था। पर हित भाव कूट कूट कर भरा हुआ था। मेरे बच्चों का दुख दर्द जानने की इच्छुक रहती थी। उनके परलोक गमन का मुझे बहुत दुख हो रहा है। मैं गुरू महाराज तथा सहायकारियों और धर्म सम्बन्धियों से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें परलोक में अच्छे सम्बन्धी मिलें।

विवेक :- मेरी मां ने मुझे सिर्फ जन्म दिया है, लेकिन पालन पोषण मेरी दादी ने किया है।

इस प्रकार बहुत विरोधी हालातों में भी मधू सूदन जी ने देव समाज की विधि से श्राद्ध की सभा सम्पन्न की।

उत्तम सवास्थ्य का आधार है - शाकाहारी भोजन

एक बार अनिल कुम्बले ने विश्व क्रिकेट में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया और अपना नाम क्रिकेट के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में तब लिखवा लिया जब उसने एक ही पारी में 10 खिलाड़ियों को आऊट कर दिया। समस्त संसार के क्रिकेट प्रेमी एव अन्य व्यक्ति आश्चर्यचकित रह गए भारत के कई व्यक्तियों ने यह सोचा कि अनिल कुम्बले के इस कीर्तिमान का कारण शायद 'मासाहार' होगा। जब पत्रकारों ने अनिल कुम्बले से उनके खान-पान के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वह शुद्ध शाकाहारी हैं और शाकाहार ही उनकी चुस्ती, स्फुर्ति और इस विजय का राज है तब सारा संसार चकित रह गया। इतना ही नहीं यह सर्वविदित है कि विश्व विख्यात पहलवान गामा, जिसने कुश्ती मे संसार में अपना अद्वितीय स्थान प्राप्त किया था, पूर्णतया शाकाहारी था। यही नही ओलिम्पिक में विश्व रिकार्ड कायम करने वाले स्टेन प्राइस और हर पैदल चलने में विशेष योग्यता रखने वाले स्वीटगौन और लम्बी दौड़ में 20 विश्व रिकार्ड स्थापति करने वाले नूरमी ये वब शाकाहारी हैं।

अक्सर मांसाहार की तरफ झुकाव वाले व्यक्ति इसलिए मांसाहारी बनते हैं कि वे स्वास्थ्य की दृष्टि से शाकाहार से अधिक मांसाहार को बलवर्धक मानते हैं और उसके लिए मुख्य तर्क होता है मांसाहार में प्रोटीन का अधिक होना।

अब विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं भारत सरकार की स्वास्थ्य बुलेटिन में प्रकाशित आंकड़ों तथा विश्व विख्यात डाक्टरों द्वारा यह प्रमाणित हो गया है कि जहां मांस में लगभग 18 प्रतिशत, अंडों में 13 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है वहीं सोयाबीन में 43 प्रतिशत, मूंगफली में 32 प्रतिशत और समान्य दालों में लगभग 24 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। इसके अतिरिक्त शरीर में ऊर्जा का स्त्रोत और जो बढ़ते हुए बच्चों के लिए भोजन का अति आवश्यक तत्व कार्बोइाइड्रेट मास में अर्थात् अंडे, मछली, बकरे आदि में गोश्त में बिल्कुल नहीं होता। इसके विपरीत दालों में 55 में 60 प्रतिशत, सोयाबीन ओर मूंगफली में लगभग 20 और सप्रेटा दूध पाऊडर में 51 प्रतिशत होता है।

इसलिए पौष्टिकता की दृष्टि से शाकाहार ही मांसाहार से अधिक उत्तम हैं शाकाहारी जानवर जैसे घोड़ा, हाथी व गैंडा ताकत के ज्वलंत उदाहरण है।

विश्व स्वास्थ्य संघ ने ऐसी 160 बीमारियों के नाम घोषित किए हैं जो मांसाहार से फैलती हैं। इन बीमारियों में मिरगी की बीमारी प्रमुख हैं। मानव पर सैंकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है जबकि वानस्पतिक चिकनाई उसे कम करती है। इसका प्रमाण यह है कि 'आर्टिरियो-स्कलेरोसिस' तथा 6कोरोनरी' हृदय रोगों में कोलेस्ट्रोल का एक बड़ा कारण है। कोलेस्ट्रोल से पत्थरी जैसे अन्य कितने ही रोग उत्पन्न होते हैं। 'न्यूयार्क लाइफ इंश्योरैंस कार्पोरेशन' के डाक्टर हंटर आर्थत इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मांस खाने से रक्तचाप बढ़ता है। मांसाहार शरीर में

विषाक्त पदार्थो का प्रवेश कराता है। जब पशु मारा जाता है उस समय त्यागने योग्य द्रव्य उसके शरीर में रह जाते हैं जिसके कारण मांसाहार में उत्तेजना का तत्व उत्पन्न होता है। इसी प्रकार रक्तचाप, आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोग से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है। यह दुर्भाग्य की बात है कि भारत में अंडे का सेवन निरंतर बढ़ रहा है। अंडा सेवन करने वाले व्यक्ति को यह नहीं मालूम कि इसमें कोलेस्ट्रोल की मात्रा बहुत अधिक होती है जबकि फलों एवं सब्जियों में यह बिलकुल नहीं होती। अंडे के सेवन से आंतों में सड़न, आंतों की टी.बी. आदि के खतरे बढ़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त अंडे और अन्य मांसाहारी पदार्थो में फाईबर नहीं होता जिससे मांसाहार कई रोगों को जन्म देता है।

मांसाहार न केवल बीमारियां ही बढ़ाता है और पौष्टिकता की दृष्टि से तो शाकाहार की तुलना में हेय है ही बल्कि धर्म व अध्यात्मिक दृष्टि से भी मांसाहार सदैव त्याज्य हैं यह निर्विवाद है कि "अहिंसा एक सात्विक और आवश्यक गुण हैं। और इसके विपरीत हिंसा मानविय गुण नहीं है, विशेषकर जब हिंसा की आवश्यकता ही नहीं हो तो केवल जीभ के स्वाद के लिए जानवरों की हत्या करना और मांसाहार की प्रवृत्ति को बढ़ाना अहिंसा के मूल सिद्धांत के विरूद्ध है। "जैसा खाए अन्न वैसा होय मन" इस उक्ति के अनुसार शाकाहार और विशेषकर सात्विक शाकाहार से मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने मे पूर्ण सहयोग मिलता है। जो व्यक्ति दूसरे प्राणियों को अभयदान नहीं दे सकता और जो जानवरों का दुश्मन है वह उसके लिए एक भयावह प्राणी है। जो जानवरों को स्वयं मारता है या अपने स्वार्थ के लिए मरने के लिए बाध्य करता है वह व्यक्ति दूसरे प्राणियों को कभी भी अभयदान नहीं दे सकता। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए शाकाहार सर्वोत्तम है।

पृष्ट 9 का बाकी

लौंग या 2 चम्मच नीबू का रस मिला कर पीने से लाभ मिलेगा

* दिनभर की थकावट दूर करने के लिए अंगूर के रस में थोड़ा नीबू का रस मिला लें। इसे पीने से ऊर्जा मिलेगी और तरोताजा महसूस करेंगे।

* यदि चूंइगम बालों मे फंस जाए, तो उसे निकालने के लिए सोड़ा वॉटर से धोएं। वह आसानी से निकल जाएगी।

* हिचकी को रोकने के लिए 1 चम्मच चीनी को मुंह में डाल कर धीरे धीरे चूसें। एक छोटा अदरक का टुकड़ा चूसने से भी हिचकी बंद हो जाती है।

* बच्चे को नैपी रैश हो जाने पर उस हिस्से को चावल या भुटटे के ठंडे मांड से धोने से तुरंत राहत मिलती है।

भगवान की सेवा में पत्र

हे देव! आपकी शरण पाकर भी में प्रतिदिन प्रातः काल अपना निज का आत्मिक साधन भक्ति - भाव से नहीं करता। हानि परिशोध के आँसुओं से आत्मा को शुद्ध नहीं करता। मेरा मन सांसारिक वासनाओं में फंसकर इधर - उधर भटकता रहता है।

अपनी प्रशंसा सुनने को तो मेरा दिल ललचाता है और सर्वदा यही चाहता हूँ कि सभी मुझे अच्छा कहकर मेरी प्रंशसा करें। किन्तु आपकी भक्ति में मेरी श्रद्धा बहुत कम है। ऐसी मेरी मूर्खता है। जिन पापों को मैंने बड़े चाव से किया उन्हें तो हृदय में छिपा कर रख लिया, तथा किसी सत्संग सभा में आपके देवप्रभावों के मिलने पर मुझसे कोई तुच्छ काम बन जाए तो उन्हे सबको सुनाता फिरूँ। मैं सर्वदा यही चाहता रहता हूं, कि संसार में मुझे महात्मा समझें। मैं कभी जो कुछ सतकर्म करता हूँ उन्हें खेत में बचे पड़े अनाज (सिला) के दानों की भान्ति चुनकर सुरक्षित रख लेता हूँ, किन्तु हृदय में छिपे दम्भ (अहंकार) उसे भी बाहर निकाले फैंकता है अर्थात मिट्टी में मिला देता है।

प्रशंसा मेरे मन की आशा रूपी रस्सी में बान्धकर इस प्रकार रखता है, जैसे किसी बन्दर को गले में डोरी बान्धकर मनमाने दंगा से नचाया जाता है और इसी प्रशंसा भाव के वशी भूत होकर मैं वैराग्य की बातें बड़े - बड़े विद्वानों की भान्ति करके सभा - स्थल की वेदी पर बैठकर सभापति कहलाता हूँ।

हे देव! मेरे इतने अवगुण होते हुए भी मैं आपका सेवक कंहलाता हूँ। मानों मैंने अपनी लज़्जा घोलकर पी ली है।

हे देव! मुझे आपकी देव - ज्योति और देव - तेज प्राप्त हो सके, ताकि मैं अपने सबसे बड़े शत्रु अंहकार से मोक्ष पा सकूं।

आपका शिष्य

नन्हे मन नहीं जानते चोट क्या होती है, दर्द क्यों हो रहा है, तो बताएंगे क्या और मरहम भी कैसे लगेगा।

शब्दों की चोट बच्चों को सहमा सकती है, खामोश कर, उनके मन में अकेलापन भर सकती है।

नन्ही ज़िंदगियों को मुस्कान के अल्फाज़ में लिखें, दर्द के नहीं।

शुभ संग्राम

मेड़ी डबवाली :- यहां 6 अप्रैल को पहुंच कर मन्दिर की सफाई आदि करके 5 बजे सभा रखी गई। सभा के लिए कईयों को फोन किए। सभा में बताया गया कि नेचर की हर विकसित चीज़ से जुडकर उसके प्रयोग का भला होता है। जैसे दीए की जगह टियूब का वा बिजली का प्रयोग लाभ दायक है। देव धर्म अति विकसित विज्ञान मूलक धर्म है। इसमें सर्वोच्च देव प्रभावों का कार्य होता है। इससे जो जुड़ जाते हैं, वह रक्षा पाते हैं।

7.4.2012, सुबह 8.30 बजे एक सभा की कि अपने घर में पक्षियों को दाना, पानी पाना अच्छा कर्म है। फिर बताया कि सच्चा प्रणाम क्या होता है। अच्छी संगत वा मुर्दा संगत क्या है? जो संगत उच्च परिवर्तन पैदा करे वह जिन्दा संगत है। सच्चा और झूठा गुरू कौन है? जो गुरू सर्व हित लाए और ज़रा भर भी हानि न करे। जो गुरू कुछ हित भी लाएं, परन्तु कुछ बुराईयां वा मिथ्या भी लाए वह सच्चा गुरू नहीं हो सकता। सब जन काफी प्रभावित हुए ओर आगे से सब सभाओं में आने का प्रण लिया। एक बीबी ने प्रभावित होकर सभापति जी के पैर छूने की कोशिश की, फिर श्रीमान जी एक परिवार को जाकर मिले और वहां से गोनियाना को रवाना हो गए।

गोनियाना मण्डी :- यहां 7.4.2012 की रात 8.30 बजे सभा की गई। गुरूदेव सिंह जी मान और उनके सपुत्र महिमा सवाई से आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य सुख लालसाओं की इच्छा रखता है, अपने भले की इच्छा नहीं रखता। नेक वा भला बनने की कोई इच्छा नहीं रखता, वह सारी उमर सुख लालसाओं में बेसुध रहकर जीवन बर्बाद कर देता है। आत्मा क्या है, कैसे बनता, बिगड़ता है, उसकी नीच वा उच्च गतियां क्या हैं, इसके विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया।

8.4.2012 सुबह की सभा में बताया गया कि हितकर हस्ती से जुड़ना, मनुष्य का सौभाग्य है। शुद्ध हवा, शुद्ध पानी वा हरियाली से जुड़ने के जैसे लाभ हैं, अच्छी नसल के कुत्ते, पशु, पेड़ की बरकतें हैं, उसी प्रकार अच्छे इन्सानों से जुड़ना भी सौभाग्य है। एक एक गुरूद्वारे में झाड़ू लगाने वाले का सम्बन्ध ट्रकों के मालिक से होने से वह पहले कण्डक्टर, फिर ड्राईवर और फिर ट्रकों का मालिक बन गया। हकीम, डाक्टर, टीचर आदि का सम्बन्ध जीवन बदल देता है। घटनाओं सहित बताया। पू० भगवान से जुडने के नियम पूरे करना, सबसे महान बरकतों का भागी बनाता है। धर्म दाता के धर्म के प्रभाव पाकर सब पक्षों में हित होता है। हमें गुरू की संगत से अधिक से अधिक जुड़ कर अपना भला करना है। जोंक वा चीचड़ की तरह सिर्फ अपने लिए जीकर जीवन बर्बाद नहीं करना।

रात को 8.30 बजे की सभा में बताया गया कि देव समाज विज्ञान मूलक शिक्षा देती है। दूसरे धर्म कल्पित बातें बताते हैं। देव समाज सम्भव बातों को मानती है, कौतक, करामातों को नहीं मानती। मनुष्य को रब नहीं चलाता, उसकी

Published on 5th of the month
20
जून - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

अन्दर की सुख लालसाएं चलाती हैं, स्वाद वासना, धन अनुराग, काम वासना और घमंड घृणा की भयानक घटनाएं पेश की। मनुष्य को अपनी परिचालक शक्तियों को समझने की अवश्यकता है गुरू महाराज की रोशनी में ही यह सम्भव है, उनकी शक्ति उनसे बचाती है। इस सभा में कुछ नये जन आकर भी शमिल हुए।

9.4.2012 इस सभा में बताया गया कि हिंसक जानवरों की सेवा पाप है। सच्ची सेवा यह है कि कि किसी के, पाप, मिथ्या, मांसाहार, रिश्वत, जूआ छुड़ाओ। गुरू महाराज ने दाता जी को कैसे उपदेश दिया, उनके पाप छूटे और 95 - 96 वर्ष की उमर तक चारों जगतों की सेवा करते रहे। श्रीमान राम सिंह जी कैसे सेवाकरी बन गए। पंडित नेतराम जी, श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी जैसे सेवाकारी जीवनों के विषय में बताया।

चार बार जय ध्वनि के साथ यहां का प्रोग्राम समाप्त हुआ। वहां से श्रीमान जी कल्याण होते हुए चण्डीगढ़ पहुँच गए।

(एक सेवक)

शोक समाचार

बहुत शोक कि श्रीमान प्रेम प्रकाश जी दिल्ली निवासी जो माननिय श्रीमती विद्या वती जी खेड़ा (उच्च लोक वासी) के छोटे भाई थे और माननिय श्रीमान मदन मोहन लाल जी के बेटे और देव समाज की प्रसिद्ध हस्ती उच्च लोक वासी डा० सिरी राम जी के पोते का 27 अप्रैल को जोध पुर (राजस्थान) में अचानक देहान्त हो गया। वह 92 वर्ष के थे। वह देव समाज के प्रसिद्ध परिवार की तीसरी पीढ़ी के भद्र सेवक थे। उनके परिवारिक जनों के सम्बन्ध में हम हमदर्दी वयक्त करते हुए, देह त्यागी आत्मा की शान्ति के लिए और परलोक सम्बन्धी हर प्रकार की रक्षा और सहायता की कामना करते हैं।

बलदेव सिंह

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts